

जीवन की 'पाठशाला'

ज्योतिषी से मिलने एक युवक आता है और कहता है, "मेरा वेतन नहीं के बराबर है। मेरे माता-पिता और पत्नी तथा तीन बच्चे और मैं, ऐसे हम परिवार में सात व्यक्ति हैं। मेरा भविष्य मुझे अंधकारमय लगता है। मेरी ज़िन्दगी क्या ऐसे अभाव में ही खत्म हो जायेगी?"

ज्योतिषी ने कहा: तुझे बड़ा स्वप्न देखना ही नहीं आता। तेरी दृष्टि कोहरे की तरह हो गई है। गुलाब कभी कांटे की फरियाद करता है? सूर्य कभी मैं जल रहा हूँ ऐसी खिन्न भावना करता है? जिस दिन तुझे पेट भरकर हँसने का मन हो, तब फिर से मेरे पास आना। उसके जाने के बाद दूसरा युवक आया। उसने ज्योतिषी से कहा: "महाराज! मैं कोई मंत्र का जाप करने की सलाह लेने आपके पास नहीं आया हूँ। मुझे यह जानना है कि क्या मैं खूब तनतोड़ मेहनत, अपराजय, आत्मविश्वास और आशावादिता से सफल होऊंगा? मैं भाग्य में विश्वास नहीं रखता, लेकिन सफलता की प्लानिंग में आपका मार्गदर्शन लेना चाहता हूँ। आपका आशीर्वाद भी मेरे लिए एक सिद्धि ही होगी।" उसने ज्योतिषी की ओर देखा और मधुर स्मित किया।



- ब्र. कु. गंगाधर

"तुम्हारी सफलता हुई पड़ी है।

तुमने जो सोचा है वह थोड़े दिन में ही प्राप्त कर लो। मनुष्य को अपनी दिव्यता के बारे में ज्योतिषी से पूछने की क्या दरकार है! परिश्रम का संकल्प और हँसमुख चेहरा, ये जीवन में से अंधकार भगाने के तेज-तरार हथियार हैं। मनुष्य पहले खुद से पराजित होता है, फिर दूसरों के हाथों से। तथास्तु, तू आगे बढ़ता रहे।" ज्योतिषी ने आशीर्वाद देते हुए कहा।

ज़िन्दगी हमें रेखाओं के रूप में मिली है। इसमें रंग भरने की जवाबदारी ईश्वर या नसीब की नहीं है, बल्कि स्वयं की है। सुंदर रूप से तैयार हुए रंगीन चित्र पर आँसू की एक बूंद गिरने से बाज़ी कैसे बिगड़ जाती है! उन दोनों युवकों में यही फर्क था। एक का रंग भरने का इरादा नहीं था, उसकी दृष्टि नसीब पर लगी हुई थी। उज्ज्वल आने वाले कल पर नहीं। जिससे उसके विकास का द्वार अपने आप बंद हो जाने वाला था। जबकि दूसरा युवक आशावादी और परिश्रम में श्रद्धा रखने वाला था। जो सोचा उसे प्राप्त करने के लिए सबकुछ कर गुज़रने की उसकी तैयारी थी। इसलिए स्वयं के भावी का निर्माता वो स्वयं ही बन जायेगा।

डेविड वार्ट्स की वो बात याद रखें कि 'आपका मस्तिष्क विचारों की फैक्ट्री है, एक अति व्यस्त फैक्ट्री। इस फैक्ट्री में एक दिन में असंख्य विचारों का उत्पादन होता है। आपके मस्तिष्क में हो रहे विचारों का उत्पादन दो फोरमेन के हाथ में है। उनमें से एक फोरमेन को 'विजय' का नाम देंगे और दूसरे फोरमेन को 'पराजय' का, और उसे पराजय के रूप में पहचानेंगे। "मि. विजय सकारात्मक विचारों का चार्ज संभालता है। वो, आप कोई भी कार्य क्यों कर सकते हो, आप उसके लिए योग्य क्यों हो, और आप इस कार्य में क्यों सफल होंगे, उसके कारण का उत्पादन करने में निपुण है।"

"जबकि दूसरा फोरमेन 'पराजय' नकारात्मक और अस्त-व्यस्त निरर्थक विचारों का उत्पादन करता है। पराजय, आप कोई कार्य क्यों नहीं कर सकते हो, आप क्यों कमज़ोर हो, उसके प्रति कारण ढूँढ़ने में निपुण है। आप क्यों निष्फल होंगे, उसके बारे में विचारों की श्रृंखला में माहिर है। मि. विजय और मि. पराजय दोनों आज्ञाकारी हैं। वे दोनों आपकी बातों पर ध्यान देते हैं। आपको दोनों में से एक को मानसिक संकेत देना है। यदि आपका संकेत सकारात्मक होगा तो मि. विजय आगे आयेगा और काम करने लगेगा। उसी तरह नकारात्मक संकेत मिलते ही पराजय सक्रिय बन जायेगा।"

ज़िन्दगी को निष्क्रिय लोग ज़रा भी पसंद नहीं हैं। कुछ कर-गुज़रने वाले लोग ही ज़िन्दगी को पसंद हैं। इसलिए हम जानते हैं कि गिने-चुने लोग ही ऊँचे शिखर पर विराजमान होते हैं और रोने-धोने वाले खाई में सड़ते रहते हैं। हम जो कुछ करते हैं, उसकी हमें खबर नहीं होती ऐसा नहीं है। यदि सत्कर्म होगा तो आपको खुशहाली और आंतरिक प्रसन्नता की अनुभूति होगी और यदि दुष्कर्म होगा तो आपको ग्लानि की अनुभूति होगी। हम जिसे अंतरात्मा की आवाज़ कहते हैं वो हमारा प्रशंसक भी है और हमें खबरदार करने वाला चौकीदार भी। अंतःकरण की आवाज़ को दरकिनार कर देंगे तो आप रीढ़ा गुनहागर बन जायेंगे और आपके ही पतन का प्लेटफॉर्म तैयार होगा। आपकी कायरता आपको आश्वासन देगी कि यह तो नसीब का खेल है। उसके ऊपर आपका नियंत्रण नहीं है! ज़िन्दगी का प्रत्येक ज़िद्दीपना आपकी प्रगति का सबसे बड़ा शत्रु है।

- शेष पेज 8 पर

सेवा और स्वयं से बेफिकर बनाता है राजयोग

आप किसी को कोई बात की चिंता तो नहीं है? चिंता, निश्चयबुद्धि बनने नहीं देती है। निश्चय में विजय है इसलिए अडोल अचल हैं। थोड़ा भी संशय है, तो अनेक प्रकार के संकल्प पैदा होते हैं। एक है संशय, दूसरा है डाउट, संशय वाले को न खुद में निश्चय, न बाबा में निश्चय, न एक दो में निश्चय, डाउट होता है। यह कहती तो है लेकिन होगा थोड़ेही...। संशय नहीं है, डाउट है।

मैंने देखा है आप लोगों को सेवा का फिकर बहुत है, चिंता नहीं है, फिकर है। सेवा से फायदे बहुत हैं ना। एक तरफ बाबा कहता कि बाबा को खूब याद करो तो विकर्माजीत बनेंगे, फिर कहता है भ्रमरी के मिसल भूँ भूँ करो। दोनों बातें एक्यूरेट हों। हम अपने को देखें कि विकर्माजीत बनी हूँ? विकर्माजीत की निशानी क्या है? उसको कोई विकल्प नहीं आयेगा। संकल्प भी आयेगा तो वह ऐसा ही काम करायेगा। संकल्प बहुत सूक्ष्म चीज़ है, इसलिए मन शान्त, दिल साफ। चेहरा मुस्कुरा रहा है। भगवान की मेहरबानी से मन शान्त है, चंचल नहीं है तो दिल बड़ी खुश है। वाह बाबा वाह! जब मन शान्त है तो बुद्धि में संकल्प अति शुद्ध हैं। संकल्प श्रेष्ठ, फिर दृढ़, कमाल है दृढ़ता के संकल्प की। उसमें बुद्धि निश्चय वाली हो गई। विजय हुई पड़ी है, वह अडोल, अचल है। जो कार्य होना है, वह हो ही जायेगा। फिकर क्यों करें! तो बेफिकर कैसे रहेंगे? चिंता से मुक्त बादशाह हैं। जब मैं बाबा के पास पहले-पहले आई तो बाबा ने कहा बच्ची, तुमसे

कोई पूछे कहाँ रहती हो? तो कहना मैं बेगमपुर में रहती हूँ। बेगमपुर के बादशाह, गम का नामनिशान नहीं।

राजयोग सहजयोग है। योग में मेहनत नहीं है, जब यहाँ बैठे हैं, चाहे सेवा में हैं, तो स्व सेवा में सर्व सेवा समाई हुई है। पयुचर की कोई फिकर नहीं है। यह नहीं कह सकते कि पता नहीं कल क्या होगा। मुझे फिकर नहीं है, परन्तु अटेन्शन है।

जब यह गीत बना हमने देखा हमने पाया शिव भोला भगवान... तो बाबा ने कहा यह गलत है, बच्चे कहना चाहिए हमने जाना, हमने पाया.. तो एक एक शब्द जो हम मुख से कहते हैं उसमें निश्चय का नशा चढ़ा हुआ हो। और सभी नशों में है नुकसान। कोई भी प्रकार का नशा हो, सेवा का भी नशा चढ़ जाता है, थोड़ा भी नशे में देह अभिमान है तो उसमें नुकसान है। जो उसकी इच्छा है अगर वैसे नहीं है तो अन्दर फीलिंग आती है, यह देह अभिमान है इसलिए बाबा कहते इच्छा मात्रम् अविद्या। यह सब बेफिकर रहने के चिन्ह हैं।

यह बात कैसे ठीक होगी, मुझे थोड़ा फिकर है, इसमें बहुत टाइम लगा है... ऐसा फिकर मैं समझती हूँ कइयों को होगा, मैंने नहीं समझा था कि ऐसी बात मेरे पास भी आयेगी, अब किसको सुनाऊँ, कौन निर्णय करेगा.. ऐसा फिकर रहता है ना!

आप भी सेवा पर हो हम भी शुरू से भारत की सेवा पर भी हैं, विश्व सेवा पर भी हैं। अगर फिकर थोड़ा भी करने की नेचर होती तो यहाँ तक नहीं पहुँचती। कई बार शरीर टेस्ट लेता है, लेकिन फिकर नहीं होती।

पर ध्यान है अन्त मते सो गति अच्छी हो। ऊं आ करके आत्मा शरीर से निकले, यह नहीं। शुरू से लेकरके सेवा क्या है?



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

मनमनाभव, मध्याजी भव। अन्दर से अचल अडोल स्थिति हो, हलचल न हो। अचानक कुछ भी हो जाए बाबा कहता तुम एवररेडी रहो। यह भी लिस्ट निकालकर देखें जो भी बाबा के महावाक्य हैं, उसमें एक्यूरेट, एवररेडी, कोई कोई का आपस में हिसाब-किताब भी होता है।

साकार में बाबा को प्रैक्टिकल में देखा था, बाबा के सामने कई बातें आई, कई बच्चों का खेल देखा, परन्तु बाबा का ध्यान अपनी स्थिति पर बहुत था, तभी आज हम सब यहाँ बैठे हैं। अगर बाबा इतना ध्यान नहीं रखता, दीदी दादी इतना ध्यान नहीं रखती तो आप यहाँ नहीं होते। चन्द्रमणी दादी दीदी का जितना अपनी स्थिति पर ध्यान था, उतना हम भी अपने ऊपर ध्यान रखें। अगर दादी को फिकर करने की नेचर होती तो आज शान्तिवन नहीं होता। यह सब कैसे बना? अभी डायमण्ड हॉल छोटा पड़ गया है। मैं कहती हूँ, वन्दरफुल बाबा, तो बाबा कहता है बच्ची सब ठीक हो जायेगा। यह दृश्य बड़ा सुन्दर है। ज़रा भी हिलने की बात नहीं है, थोड़ा भी न हिलें। ऐसी अन्तिम स्थिति अभी-अभी बनानी है। भट्टी माना संगठन। संगठन में यह बातें स्पष्ट करने में इज़ी लगता है।



दादी हृदययोगिनी
अति. मुख्य प्रशासिका

खुशी में कर्म, कर्म नहीं लगता, खेल लगता है

जब हम परमात्म मिलन, परमात्म प्यार का अनुभव करना चाहते हैं तो हमें देह भान की स्मृति को भूलना पड़ता है और

अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप में अशरीरी स्थिति में स्थित होना पड़ता है। जब हम अपने आत्मा रूप में स्थित हो जाते हैं तो आत्मा को सिवाय परमात्मा के और कौन है? आत्मा का रिलेशन, कनेक्शन सब एक परमात्मा से है। तो जब हम परमात्म प्यार का अनुभव करना चाहते हैं, तो यही छोटी सी विधि अपनायी होगी कि मैं आत्मा बच्चा परमात्मा बाप से मिलन मना रहा हूँ। और वो परमात्म प्यार, परमात्म अनुभूति व मिलन इतना अलौकिक है, इतना प्यारा है जो आपकी दिल ही नहीं होगी उस परमात्म प्यार को छोड़ने की। चाहे आप बॉडी कॉन्सेस में आकर कर्म भी करेंगे तो भी आपका मन-बुद्धि परमात्म प्यार की अनुभूति को भूलेगा नहीं। उस प्यार की प्राप्ति से आप जो भी कर्म करेंगे तो उसमें खुशी बहुत होगी। और जहाँ खुशी होती है वहाँ कर्म कैसे होता है? यह तो आपको अनुभव होगा कि जब मन में किसी भी प्रकार की खुशी होती है तो खुशी

में हाथ-पांव बहुत जल्दी-जल्दी और अच्छे चलेंगे, उसमें थकावट नहीं होगी। खुशी ऐसी खुराक है जिसमें थकावट भूल जाती है। और अगर प्राप्ति नहीं है तो खुशी भी नहीं होगी। और खुशी नहीं है तो जो काम करेंगे वह जैसे मजबूरी से, बोझ से करेंगे। लेकिन जब खुशी होती है तो कर्म, कर्म नहीं लगता, बोझ नहीं लगता, एक खेल लगता है। खुशी एक ऐसी खुराक है जो मनुष्य को कमज़ोर से शक्तिशाली बना देती है। तो आत्मिक शक्ति व आत्मिक खुशी से जो प्राप्ति होती है वह मुश्किल को सहज कर देती है, भारी चीज़ को एकदम हल्का कर देती है। जैसे कुछ हुआ ही नहीं, किया ही नहीं। तो ये परमात्म प्यार, अविनाशी प्यार, आत्मिक प्यार और ये अविनाशी खुशी- ये चीज़ें हम लोगों ने अपने प्यारे से प्यारे परमात्मा पिता से प्राप्त की। और हम तो ऐसे ही समझते हैं कि सचमुच जीवन है तो खुशी है। हमको शिवबाबा ने स्लोगन भी दिया था कि प्राण चला जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। क्योंकि खुशी-खुशी में प्राण चले जाएंगे तो गैरन्दी है आपका जन्म अच्छा होगा। लेकिन अगर जीवन है और खुशी चली जाए तो वह जीवन, जीवन नहीं होता। वह न जीये हुए हैं, न मरे हुए हैं। इसीलिए बापदादा ने जो आप सबको

अविनाशी गिफ्ट दी है, इस खुशी को बढ़ाना चाहते हो तो इसकी विधि ये है कि जितना आप बांटेंगे उतना बढ़ेगी। और कोई भी चीज़ बांटने से कम होती है, लेकिन यह खुशी अविनाशी खुशी ऐसी चीज़ है जो बांटने से बढ़ती है।

जो अनुभूतियाँ और शक्तियाँ प्राप्त की हैं उसको कायम रखने के लिए आगे बढ़ने के लिए आप एक बात ध्यान में रखना कि इस ईश्वरीय परिवार के कनेक्शन और रिलेशन में सदा रहना है। अगर यह संग करते रहेंगे तो आपके ऊपर ये ईश्वरीय रंग, खुशी का रंग, प्यार का रंग, ऐसा पक्का लगता जायेगा जो आप मिटाना चाहो तो भी नहीं मिटा सकेंगे। क्योंकि कहा जाता है-जैसा संग वैसा रंग। एक बार की यह अनुभूति जीवन भर के लिए एक आधार हो जाती है। और सब स्थूल चीज़ें रह जायेंगी, लेकिन ये अविनाशी प्यार, अविनाशी खुशी जो है, ये ऐसे खजाने हैं जो आत्मा साथ में ले जायेगी, संस्कार भरकर जायेगी। आजकल दो चीज़ें ही जीवन में बहुत आवश्यक हैं- एक प्यार और दूसरा खुशी। प्यार से दो शब्द भी किसको बोल दो तो वो दो शब्द भी उसे कितनी हिम्मत दिलाते हैं जिससे उसके जीवन में एक नया उमंग-उत्साह उत्पन्न हो जाता है।